पंजीकृत संख्या 72/54–55 ।। वन्दे मातरम्।। Tel. 0141-2377799
Web site: www.rssrashtriya.org E- mail: rss.rashtriya@gmail.com

राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय)

कार्यालय : 82, पटेल कॉलोनी, गवर्नमेन्ट प्रेस के पास, सरदार पटेल मार्ग, जयपुर–302001
संरक्षक : सर्वश्री नानक कुन्दनानी, संतोष चन्द्र सुराणा, चौथमल सनाढ्य, राजनारायण शर्मा, श्री रामावतार शर्मा
(Regd. & Recognised by Govt. & Affiliated to ABRSM, AIPTF, AISTF, E.I. & RRKM)

सम्पत सिंह	देवलाल गोचर	प्रहलाद शर्मा	अरविन्द व्यास
अध्यक्ष	सभाध्यक्ष	संगठन मंत्री	महामंत्री
मो. 94133–44625	मो. 94144–03756	मो. 94140–56109	मो. 94143–96596

क्रमांक : रा.शिक्षक संघ(राष्ट्रीय)/महामंत्री/ 56 दिनांक –04.12.2020

माननीय शिक्षामंत्री महोदय,
राजस्थान सरकार, जयपुर।

विषय :– स्माईल–2 व ऑन–लाईन क्लासेस बन्द कर न्यूनतम संख्या में बालकों को स्कूल बुलाकर अध्यापन व गृहकार्य देने के आदेश पारित करवाने बाबत्।

संदर्भ :– संगठन के चिंतन ''ऑन–लाईन शिक्षा की उभरती समस्याओं के साथ स्माईल–2 से आंकलन दिला पाएंगी रिजल्ट की मुस्कान?''

महोदय,

निवेदन है कि कोरोनाकाल के बाद प्रदेश में ऑफ–लाईन शिक्षा पूर्णतया बंद है और उसके स्थान पर ऑन–लाईन शिक्षा प्रदान करने नित नये–नये प्रयोग किये जा रहे हैं। विभिन्न माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा रही है। जूम व अन्य एप्प के माध्यम से ऑन–लाईन कक्षाएँ ली जा रही है। शिक्षावाणी, दूरदर्शन, यू–ट्यूब आदि माध्यमों से शिक्षा प्रदान की जा रही है। किन्तु असंख्य अभिभावकों की वित्तीय स्थिति में अकल्पनीय अंतर है जिसके कारण शिक्षा से समाज दो वर्गों में विभाजित हो गया है। प्रथम कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन, लैपटॉप, टेबलेट व इंटरनेट सुविधा नहीं होने वाले एवं दूसरा यह सब सुविधा बालकों को प्रदान करने वाले परिवार।

विभिन्न समाचार पत्रों में छपे समाचारों से प्राप्त जानकारी के अनुसार भारत देश में तकरीबन 24 प्रतिशत विद्यार्थियों के पास ही इंटरनेट सुविधाएं है। वहीं विद्यार्थी ऑन–लाईन शिक्षा का लाभ प्राप्त कर रहे है। शेष गरीब तबके के बालकों के पास इन सभी सुविधाओं का अभाव है। इसके साथ जिनके पास स्मार्ट फोन व इंटरनेट की सुविधा है उन बालको के साथ कुछ नई स्वास्थ्यगत समस्याएं भी उत्पन्न होने लगी। घंटो स्क्रीन पर आंख लगाए बैठने से बालको की दृष्टि पर असर पड़ने लगा है। स्क्रीन से निकलने वाली रेडियो सक्रिय गामा किरणे आंखों की रेटिना को प्रभावित कर रही है। जिससे आर्थोपोडिक समस्याओं के साथ स्पांडिलाइट्स, कंधो व पीठ पर दर्द, गर्दन पर सर्वाइकल दर्द आदि रोग बढ़ने लगे है। बिल्कुल अकेलेपन में काम करने से अवसाद ग्रस्त होने के संकेत भी दिखाई पड़ रहे है। कई बालको में माँ–बाप को टेढ़े–मेढ़े उत्तर देना व चिड़चिड़ापन जैसी विकृतियां भी आने लगी है। इसके साथ ही थकान व मोबाइल पर गेम खेलने की समस्या भी उभरने लगी है।

संगठन का निवेदन है कि ऑनलाइन क्लासेस व स्माईल –2 के मामले में चिंतन का विषय यह है कि कक्षा में तथा विद्यालय में रहकर विद्यार्थी अपने अध्यापको से उनके सामयिक कथनों, आचार–व्यवहार एवं समस्याओं की पूर्ण समझ एवं तदनुसार उनकी प्रतिक्रिया से जो कुछ सीख पाता था और उसके कारण बालक का व्यक्तित्व निर्माण होता था वह ऑनलाइन शिक्षा में असम्भव हो गया है। गुरु के सानिध्य में क्षमा, बड़प्पन व सहृदव्यवहार, ईमानदारी, परिश्रम, भाईचारा आदि विभिन्न गुणों के साथ श्रेष्ठ नागरिक बनने की प्रेरणा देने वाले जीवन मूल्यों का विकास सम्भव है जो ऑनलाइन शिक्षा पद्धत्ति में आना असम्भव है। ऑनलाइन शिक्षा तो विषय का ज्ञान दे सकती है, विद्यार्थी को कुछ समय के लिए व्यस्त रख सकती है और कुछ आयाम व्यक्तित्व में जोड़ सकती है किंतु अंततः वह मौलिकता से हीन एक मशीनी मानव ही तैयार कर सकती है और कुछ नही। ऑनलाइन शिक्षा समयानुकूल अवश्य है किंतु आत्मा से विहीन है जिसे राष्ट्र निर्माता तैयार करने की कल्पना कोरी कल्पना मात्र है।

राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) का निवेदन है कि राज्य में ऑनलाइन शिक्षा पर बहुत जोर दिया जा रहा है किंतु बालको के पास स्मार्ट फोन नही है। कई बालको के पास बिजली व इंटरनेट की सुविधाओं का अभाव है। किसी अभिभावक के 4 बालक विद्यालय में अध्ययनरत है तो वह अपने चारों बालको के लिए 4 स्मार्ट फोन हैंड सेट और चारो के लिए अलग से इंटरनेट पैक की सुविधा देने का खर्चा कैसे वहन कर सकेगा? अत्यंत विचारणीय है।

विभाग द्वारा स्माइल–1 के जरिये कॉलिंग कर बालको के स्व–अध्ययन में आने वाली समस्याओं का समाधान करने व्यवस्था की गई। बालको के पास तो फोन नही किन्तु उसके अभिभावक के पास फोन होने पर अभिभावक अपने मजदूरी स्थल पर बात कर बालक की पढ़ाई अच्छी चलने का हवाला देकर इति श्री कर लेता। कक्षा 1 से 8 तक के प्रत्येक बालक

को कार्य पुस्तिका भरने देने के आधार पर पढ़ाई पूरी हो जाना मान लेना कहाँ तक सार्थक हो सकता है। जबकि बालको के पास स्मार्ट फोन, कम्प्यूटर, टीवी, टैबलेट, लैपटॉप आदि उपकरण नही होने के साथ इंटरनेट कनेक्शन की सुविधा नही है। कई अभिभावकों की आर्थिक स्थिति ठीक नही है जिसकी वजह से वे इन उपकरणों को खरीद नही सकते तथा नेट पैक डलवाने का खर्चा करने में भी सक्षम नही है। लॉकडाउन के बाद इंटरनेट का उपयोग बहुत अधिक बढ़ गया है जिसके कारण किसी के पास स्मार्ट फोन अथवा लैपटॉप है भी तो इंटरनेट की स्पीड नही आती है। कई जगह बिजली की सुविधा भी नही है इन सभी कारणों से बालको की पढ़ाई ही नही हो पाई है। जब पढ़ाई ही नही हो पाई है ऐसे में अब स्माइल–2 के द्वारा बालको को ऑनलाइन गृह कार्य देने के आदेश हुए और जिनके पास स्मार्ट फोन नही उनके घर घर जाकर गृह कार्य देने व वापिस उसे संकलित कर उसकी जांच के आधार पर बालक के आंकलन करने व उस आकलन के आधार पर उसे आगामी कक्षा में क्रमोन्नत करने के आदेश हुए है। इस प्रकार की प्रक्रिया से प्राप्त रिजल्ट बालको के चेहरे पर मुस्कान दिला पाएंगी। यह एक विचारणय प्रश्न है। जबकि भारत मे केवल 24 प्रतिशत भारतीयों के पास ही इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है। ऐसे में ऑनलाइन शिक्षा की सार्थकता पर स्वयं सवाल उठ जाते है।

संगठन को ऑनलाइन विभिन्न समाचार पत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक लोकल सर्कल नाम की एक गैर सरकारी संस्था ने एक सर्वे किया है जिसमें 203 ज़िलों के 23 हज़ार लोगों ने हिस्सा लिया। जिनमें से 43 प्रतिशत लोगों ने कहा कि बच्चों की ऑनलाइन क्लासेस के लिए उनके पास कम्प्यूटर, टैबलेट, प्रिंटर, राउटर जैसी चीज़ें नहीं है। ग्लोबल अध्ययन से पता चलता है कि केवल 24 प्रतिशत भारतीयों के पास स्मार्टफोन है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण रिपोर्ट 17–18 के अनुसार 11 प्रतिशत परिवारों के पास डेस्कटॉप कंप्यूटर/ लैपटॉप/नोटबुक/ नेटबुक/ पामटॉप्स या टैबलेट हैं। इस सर्वे के अनुसार केवल 24 प्रतिशत भारतीय घरों में इंटरनेट की सुविधा है, जिसमें शहरी घरों में इसका प्रतिशत 42 और ग्रामीण घरों में केवल 15 प्रतिशत ही इंटरनेट सेवाओं की पहुँच है।

इंटरनेट की उपयोगिता भी राज्य दर राज्य अलग होती है जैसे दिल्ली, केरल, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और उत्तराखंड जैसे राज्यों में 40 प्रतिशत से अधिक घरों में इंटरनेट का उपयोग होता है वहीं बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में यह अनुपात 20 प्रतिशत से कम है। स्कूलों द्वारा डिजिटल पढ़ाई के लिए व्हाट्सएप ग्रुप बनाये जा रहे हैं और उसमें स्कूल रिकॉर्ड में बच्चों के दिए गए नंबरों को जोड़ा जा रहा है लेकिन इन बच्चों के पास फ़ोन ही नहीं है, रिकॉर्ड में जो नम्बर होते हैं वो परिवार के किसी बड़े के होते हैं क्योंकि इन बच्चों के अपने फ़ोन तो होते नहीं हैं बल्कि कई बार ये भी होता है कि पूरे घर के लिए एक फ़ोन होता है और जिसका सबसे ज्यादा उपयोग परिवार का मुखिया करता है, या फोन में वाट्सएप ही नहीं है तो बच्चे कैसे पढ़ पायेंगे।

कई बालको के परिवार के पास नेट प्लान भी कम राशि का होता है, जिससे नेट में बार–बार रुकावट आती है, पठन सामग्री डाउनलोड होने में ज्यादा समय ले रही है, क्वालिटी भी खराब होती है जिससे उसे पढ़ना और समझना बच्चों के लिए मुश्किल होता है। ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा 2017–18 में गांवों में किये सर्वेक्षण के आधार पर भारत के केवल 47 प्रतिशत परिवारों को 12 घंटे से अधिक जबकि 33 प्रतिशत को 9–12 घंटे बिजली मिलती है और 16 प्रतिशत परिवारों को रोजाना एक से आठ घंटे बिजली मिलती है।

इन सबके अलावा ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों में आंखों में समस्या होने लगी है। याद करने की शक्ति भी कम हो रही है। बच्चा हर चीज कंप्यूटर पर सेव कर लेता है। किताब से तो कोई पढ़ाई हो नहीं रही, जिससे बच्चा याद भी करे तो उसमें ऐसा हो रहा है जिस तरह मोबाइल आने से हमें नंबर याद होना बंद हो गया है। उसी तरह से ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों की मेमोरी लॉस हो रही है। घरों में अधिकांश समय मोबाइल और लैपटॉप से चिपके रहने के कारण बच्चों की रचनात्मक क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसका सीधा असर बच्चों के मानसिक विकास पर होगा।

अतः इन सभी परिस्थितियों से आप अवगत है। ऐसे में राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) की मांग है कि प्रदेश की स्कूलों में बालको को कक्षावार अथवा न्यूनतम संख्या में बुलाकर अध्यापन व गृहकार्य देने के आदेश पारित किए जाए ताकि बालको को उचित शिक्षण व मार्गदर्शन मिल सके और शिक्षको व बालको में कोरोना संक्रमण के भय से मुक्ति मिल सके।

भवदीय

(अरविन्द व्यास)
महामंत्री

प्रतिलिपि :–

1. श्रीमान् प्रमुख शासन सचिव–स्कूल शिक्षा।

(अरविन्द व्यास)
महामंत्री